

रोगवाहक जीवों की रोकथाम और नियंत्रण

नवनीत कुमार गुप्ता

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तंदुरुस्ती सुखमय जीवन का आधार है। हर कोई अच्छे स्वास्थ्य की इच्छा रखता है। प्राचीन काल से ही अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनेक उपाय किए जाते रहे हैं। आधुनिक समय में भी बेहतर स्वास्थ्य, दवाओं, उपचारों और परामर्श पर आधारित उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर वैज्ञानिक अध्ययन होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य सुविधाओं को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 7 अप्रैल 1948 को एक विशिष्ट संस्था का गठन किया था जिसे आज हम विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के नाम से जानते हैं। अपनी स्थापना के वर्ष ही WHO द्वारा आयोजित विश्व स्वास्थ्य सभा में 1950 से प्रत्येक साल 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष स्वास्थ्य से सम्बंधित एक विशेष विषय को लेकर पूरे विश्व में जागरूकता के लिए विश्व स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया जाता रहा है। इस प्रकार WHO से सम्बंधित अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय संस्थाएं चयनित विषय पर दुनिया भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं।

जहां वर्ष 2013 में विश्व स्वास्थ्य दिवस का मुख्य विषय 'हेल्थी हार्ट बीट, हेल्थी ब्लड प्रेशर' था वहीं 2014 में विश्व स्वास्थ्य दिवस का विषय 'वेक्टर जनित बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण' था। मलेरिया, डेंगू, फाइलेरिया, चिकनगुनिया, लीशमेनियासिस, जापानी इन्सेफेलाइटिस, पीला बुखार आदि वेक्टर जनित बीमारियां पूरे विश्व, विशेषकर विकासशील देशों में एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या है। वेक्टर जनित बीमारी से आशय उन बीमारियों से है जो किसी वाहक जीव द्वारा एक से दूसरे इंसान तक पहुंचती हैं। इस वाहक जीव को वेक्टर कहते हैं।

WHO के अनुमान के अनुसार प्रति वर्ष विश्व भर में तकरीबन एक अरब लोग वेक्टर (रोगवाहक जीवों) के कारण उत्पन्न बीमारियों से ग्रसित होते हैं और इन बीमारियों

से करीबन 10 लाख लोगों की मौत होती है।

वेक्टरजनित बीमारियों में से एक डेंगू कुछ सालों से तेज़ी से फैल रहा है। विश्व की करीबन 40 प्रतिशत आबादी पर इसका खतरा मंडरा रहा है। इस चिंताजनक स्थिति को देखते हुए इसकी रोकथाम और नियंत्रण को लेकर तुरंत कार्रवाई के लिए रणनीति बनानी होगी।

सामान्यतया एक संक्रमित व्यक्ति से किसी रोगवाहक जीव द्वारा रोगाणु दूसरे व्यक्ति तक पहुंच जाता है। कुछ सामान्य वाहकों में मच्छर, घरेलू मक्खी, जूं, खटमल और घोंघे जैसे जीव शामिल हैं जो संक्रमित व्यक्ति के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाते हैं। इसी प्रकार कृतकों में चूहे जैसे जीव भी वेक्टर जनित बीमारियां फैलाते हैं। ये रोगवाहक जीव व्यक्ति को बड़ी संख्या में परजीवियों और रोगाणुओं से संक्रमित कर देते हैं जिससे व्यक्ति काफी कमज़ोरी महसूस करता है।

इस समय विकासशील देशों में जंतु वाहित रोग बड़ी चिंता का विषय हैं। अव्यवस्थित सिंचाई पद्धति और अपर्याप्त जल निकासी व्यवस्था, अपशिष्टों का सही ढंग से निपटान न होना, स्वच्छता की कमी और जल भराव जैसे कारणों से रोगवाहक जीवों की संख्या में काफी वृद्धि होती है। इसके अलावा अपर्याप्त आवास, वन विनाश, जैव विविधता का ह्रास वगैरह भी रोगवाहक जीवों की संख्या में वृद्धि के कारण हैं।

सन 1940 में कृत्रिम कीटनाशकों की खोज से रोगवाहकों के नियंत्रण में काफी मदद मिली। इसके बाद 1950 से 1960 के दौरान ऐसी दवाओं के छिड़काव का व्यापक कार्यक्रम चलाया गया। कीटनाशियों, पीड़कनाशियों, लार्वानाशियों और कृतकनाशियों जैसे रसायनों की मदद से अनेक रोगवाहक जीवों का खात्मा किया जा सकता है। इसके अलावा रोगवाहक जीवों का खात्मा करने के लिए अनेक जैविक कारक जैसे मच्छरों के लार्वा के खात्मे के

लिए मच्छलियों का उपयोग किया जा सकता है। आज ऐसे पादप रसायन भी उपलब्ध हैं जिनके द्वारा रोगवाहक जीवों की तादाद को नियंत्रित कर संक्रमण के खतरे को कम किया जा सकता है। इसके अलावा पर्यावरण प्रबंधन सम्बंधी रणनीतियों के तहत अपने आसपास के परिवेश को स्वच्छ और साफ रखकर भी वेक्टरों में कमी करने के साथ ही उनका खात्मा भी किया जा सकता है।

इस अभियान का उद्देश्य रोगवाहक जीवों द्वारा उत्पन्न बीमारियों से बचाव करना है। विशेषकर उन परिवारों के

लिए जो ऐसे क्षेत्रों में रह रहे हों जहां बीमारियां वेक्टर के द्वारा फैल कर एक से दूसरे देश में पहुंचती हैं। इस अभियान का उद्देश्य जनता को एवं वेक्टर जनित बीमारियों से ग्रस्त विभिन्न देशों के नीति-निर्माताओं को इस बात को लेकर जागरूक करना है कि इन बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण के और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। असल में अपने शरीर की अच्छे से देखभाल करके और कुछ सावधानियां अपनाकर हम ऐसी अधिकांश बीमारियों से बचे रह सकते हैं। (स्रोत फीचर्स)

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता व्यक्तिगत 150 रुपए संस्थागत 300 रुपए